International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(3): 41-43

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(3): 41-43
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 13-02-2015
Accepted: 01-03-2015

डा. प्रवीण बाला
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (तदर्थ) भारती कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय

Correspondence
डा. प्रवीण बाला
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (तदर्थ) भारती कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय

छत्तीसगढ़ के अभिलेखों में कला की अभिव्यक्ति

प्रवीण बाला

कला शब्द कल् धतु कच् तथा टाप् प्रत्यय से मिलकर बना है, जिसका अर्थ किसी वस्तु का छोटा खण्ड अथवा टुकड़ा कहा गया है जबकि प्रयोगात्मक रूप से कला का अर्थ शिल्पकला एवं ललित कला आदि से है, इसी सन्दर्भ में कलाऐं 64 प्रकार की बतायी गई है।[1] इन सभी कलाओं का प्रभाव मानव जीवन से सम्बन्धित सभी गतिविधियों पर पड़ता है, जिससे शास्त्रों का प्रभाव भी पफीका दिखाई देता है। कला के विषय में भोलानाथ तिवारी ने कहा है कि– अपने व्यापक रूप में कला मानव की कर्तव्य शक्ति का किसी भी मानसिक तथा शरीरिक, उपयोगी एवं आनन्ददायी इन दोनों से युक्त वस्तु के निर्माण के लिए किया गया कौशल युक्त प्रयोग है इस प्रकार कला का क्षेत्रा अत्यन्त व्यापक एवं अनन्त है।[2] कला शब्द के लिए पहले शिल्प शब्द का प्रयोग किया जाता था, भारतीय परम्पराओं के अनुसार कला उन सभी क्रियाकलापों को कहते हैं जिसमें कौशल अपेक्षित है।[3] अतः कला व्यक्ति की भावनाओं की व्यापक अभिव्यक्ति है, कला समाज तथा संस्कृति का शृंगार करती हुई मानव के समग्र जीवन में रस का सिंचन करती है।

प्राचीन भारतीय छत्तीसगढ़ के अभिलेखों का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि इस राज्य का कला एवं स्थापत्य उतना ही प्राचीन है, जितना की भारत का इतिहास छत्तीसगढ़ के कला एवं स्थापत्य को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है। यथा– प्रागैतिहासिक शैलाश्रय, मूर्ति शिल्प तथा मन्दिर एवं भवन निर्माण कला।

प्रागैतिहासिक चित्राकला

आदिकाल में मानव पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करता था, इन पर्वतीय कन्दराओं में आदिम मानव ने अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति आड़ी, तिरछी रेखाएँ खींचकर तथा उस समय उसके सम्पर्क में आने वाले पशुओं की आकृति को उकेरकर की थी, इस प्रकार प्रागैतिहासिक गुपफाचित्रा छत्तीसगढ़ के कुछ क्षेत्राों से मिलते हैं जैसे सिंघनपुर, कबरा गुपफाऐं, बानी पहाड़ी, बसनाझर, ओगना, खैरपुर, बैनीपाट कर्मागढ़ तथा नवागढ़ पहाड़ी क्षेत्रा आदि इन चित्राों में प्रमुख रूप से भैंसा, हिरण, अश्व, शेर, छिपकली, नृत्यरत मानव महिला सर्प तथा प्रतीकात्मक चित्राों का अंकन प्रमुख रूप से मिलता है।[4]

मूर्तिकला

प्राचीन संस्कृति, इतिहास तथा कला का अध्ययन तब तक पूर्ण नहीं होता जब तक कि मूर्ति कला का पूर्ण ज्ञान ना हो प्राप्त किया जाये। छत्तीसगढ़ प्राप्त होनेवाली अधिकतर मूर्तियाँ देवताओं से सम्बन्धित रही हैं, इन मूर्तियों में देवताओं के विभिन्न स्वरूपों को उकेरा जाता है जैसे सौम्य, रौद्र, करूण, भयानक, आदि। देवताओं के इन्हीं रूपों को शब्द शिल्पियों द्वारा अभिलेखों के माध्यम से प्रकाशित किया जाता है।

प्राचीन भारतीय अभिलेखों में मूर्ति के लिए प्रतिमा शब्द का उपयोग किया गया है।[5] इन प्रतिमाओं का निर्माण कलाओं के नियमों के अनुकूल ही किया जाता था, कहा भी गया है कि अर्जुन के समान धर्नुविद्या में कुशल किसी व्यक्ति का चित्रा उसके गुणों के अनुरूप बनाया जाना चाहिए।[6]

अभिलेखों में आए वर्णनों के आधार पर जिन देवी देवताओं की मूर्तियों के विवरण मिलते हैं उसका क्रमशः वर्णन निम्न है–

ब्रह्मा – तीनों देवताओं ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश में ब्रह्मा का सर्वप्रथम स्थान है, ब्रह्मा को अभिलेखों में सृष्टि की रचना करने वाले के रूप में वर्णित किया है।[7]

विष्णु – बूढ़ीखार से देश की प्राचीनतम लिखित चतुर्भुजी विष्णु की मूर्ति मिली है, जिसे चारों ओर उकेर कर बनाया गया है, इस लेख की लिपि के आधार पर इसे लगभग ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी का बताया गया है।[8]

चतुर्भुजी विष्णु – गोपालपुर प्रस्तर शिलालेख में विष्णु की चार भुजायें बतायी गयी हैं वे चक्रपाणि तथा कौस्तुभमणि धारण किये हुए हैं।[9]

नरसिंह विष्णु– विष्णु के नरसिंह अवतार की व्याख्या गोपालपुर शिलालेख में मिलती है, इस लेख में कृष्ण द्वारा 'हिरण्यकश्यप' को अपनी क्रोधग्नि से नष्ट करते हुए तथा उसका हृदय विदारण करते हुए वर्णित किया गया[10]

शेषशाही विष्णु – पृथ्वीदेव द्वितीय के रतनपुर शिलालेख में भगवान विष्णु को शेषनाग की शैया पर शयन करते हुए वर्णित किया गया है तथा उनके चरणों में लक्ष्मी विराजमान दिखाई गई है।[11]

शिव की मूर्ति – छत्तीसगढ़ के लेखों से विदित होता है कि शिव के विभिन्न रूपों की मूर्तियां बनायी जाती थी– शिव के द्वारा किये गये त्रिपुरदाह का दृश्य रत्नदेव द्वितीय के अकलतरा शिलालेख में वर्णित मिलता है, इसमें शिव की पत्नी गंगा को इनकी जटाजूट में प्रवाहित दिखाया गया है।[12]
गोपालदेव के रायपुर मूर्ति शिलालेख में 'उमामहेश्वर' की मूर्ति बनवाये जाने का उल्लेख मिलता है।[13]

देवियों की मूर्तियाँ

पुजारी पाली प्रस्तर शिलालेख में देवियों की स्तुति की गई है जिससे उनकी मूर्तियों की पहचान आसानी से की जा सकती है।
पुजारीपाली शिलालेख में जिन देवियों का वर्णन मिलता है उनका विवरण इस प्रकार है–
1. वैष्णवी देवी – विष्णु की शक्ति, गरूडासीन तथा शंख एवं चक्र धरण करने वाली देवी है।

2. माहेश्वरी – ये शिव की शक्ति हैं, इनकी सवारी महावृषभ है।

3. षण्मुखा – ये शिव के पुत्रा कार्तिकेय की शक्ति है, इनके हाथ में शक्ति तथा इनके 6 मुख हैं।

4. वाराही – विष्णु के वाराह रूप की शक्तिदेवी वाराही देवी कही गई है, ये भयंकर चिंघाड़ करने वाली तथा दातों में पृथ्वी को उठाये हुए हैं।

5. नरसिंह – नृसिंह भगवान की शक्ति ने अपने पायलों के घूर्णन से तारामण्डल को पृथ्वी पर गिरा देती हैं।

6. ऐन्द्री – इन्द्र भगवान की शक्ति होने के कारण इन्हें एन्द्री कहा गया है, इनका वाहन हाथी तथा हाथ में वज्र धरण किये हुए हैं।

7. चामुण्डा – इनका रंग कमल के पत्ते के समान श्यामवर्ण का है, ये प्रेत पर सवार होने वाली है तथा यम की शक्ति कही गई है।

8. त्वरिता देवी – इनका वर्ण लाल बताया गया है।

9. समया देवी – इन्हें तीन मुखों वाली देवी बताया गया है।

10. चण्ड विक्रान्ता – महावीर, पराक्रमी शुंभ–निशुंभ राक्षसों का संहार करने वाली।

11. सरस्वती – गणेश की शक्ति कही गयी है, इनके हाथ में सिद्धि है।[14]
इन विवरणों के अतिरिक्त आधुनिक बिलासपुर से कुछ मूर्तियां प्राप्त हुई है, जिनमें सहदेव, अर्जुनदेव, भीमसेनदेव, नकुल के नाम उत्कीर्ण है।[15]
छत्तीसगढ़ से कई मूर्ति लेख मिले हैं जिनमें 'जोगी कान्हों'[16] तथा भैरमगढ़ से 'मगरध्ज जोगी' की मूर्ति मिली है।[17]
सिरपुर से उत्खनन के दौरान लगभग 8वीं तथा 9वीं शताब्दी ईसवी की भगवान बुध्द की धतुप्रतिमा मिली है जिस पर बौध्दों का बीजमंत्र 'ये धर्मा प्रभवा हेतु तेषां तथागतो ह्यवद् तेषाऽच यो निरोध एवंवादी महाश्रवण'' उत्कीर्ण मिलता है।[18]
इसके अतिरिक्त इस भू–भाग से बज्रपाणि[19], मंजुश्री[20], तथा तारा[21] की बौध्द प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेख मिले हैं इनके आधर पर यह कहा जा सकता है कि शासकों द्वारा समय समय मूर्तियों का निर्माण करवाकर प्रतिभा विज्ञान को एक नया आयाम दिया होगा। इसके अतिरिक्त गंधेश्वर मंदिर के भीतर स्थापित बुध्द की मूर्ति लेख मिला है जो लगभग 8वीं 9वीं शताब्दी ईसवी का है।[22]
अतः उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ राज्य में स्थापित मन्दिरों में शिव, विष्णु, गणेश, देवी तथा बौध्द ध्र्म से सम्बन्धित ट्टषियों की मूर्तियाँ स्थापित करवायी गई होगी जिनके प्रमाण यहाँ के अभिलेखों तथा भग्नावेषों में मिलते हैं।

स्थापत्य कला

स्थापत्य के अन्तर्गत प्राचीन काल में निर्मित किये गये सभी प्रकार के भवन, दुर्ग, मन्दिर, राजप्रसाद, स्तूप, विहार तथा सरोवर आदि आते हैं। छत्तीसगढ़ के अभिलेखों की विषय वस्तु के विवेचन से ज्ञात होता है कि इस भाग पर शासन करने वाले राजाओं ने अनेक भवन, मंदिर, सरोवर, मठ या विहार बनवाये थे जिनके अवशेष आज भी छत्तीसगढ़ राज्य से मिलते है परन्तु भवन आदि के विषय में कोई ठोस जानकारी नहीं मिलती है।
छठी से नवीं शताब्दी के अधिकतर मंदिर ईंटों से बनवाये गये थे जैसे– सिरपुर का लक्ष्मण, राम मन्दिर[23] तथा खरोद का शबरी मन्दिर[24], राजिम का राजीव लोचन मंदिर[25] आदि। छत्तीसगढ़ के ईंटों के मंदिर में सिरपुर का लक्ष्मण मन्दिर भारतीय स्थापत्य कला की अनुपम कृति माना जाता है, इस मन्दिर में ईंटों को तराशकर मंदिर की बाह्य दिवारों का अलंकरण किया गया है, इसमें विष्णु के विभिन्न अवतारों का तथा कृष्ण लीला का अंकन किया गया है जिससे यह कहा जा सकता है कि यह विष्णु का मन्दिर था।[26]
पाण्डुवंशी महाशिव बालार्जुन की माता वासटा द्वारा सिरपुर में विष्णु मन्दिर बनवाया था सम्भवतः यहाँ पर उसके भी अवशेष हो।[27]
उपरोक्त वर्णित मन्दिरों के पश्चात् छत्तीसगढ़ में ईंटों से निर्मित कोई अन्य मंदिर नहीं मिला है।
राजिम शिलालेख से ज्ञात होता है कि नलवंशी शासक विलासतुंग ने अपने स्वर्गवासी पुत्रा की स्मृति में विष्णु का मन्दिर बनवाया था।[28] पाण्डुवंशी शासक महाशिव गुप्त ने शिवमन्दिर की निर्माण करवाया था।[29] कलचुरि शासक जाजलल्देव द्वितीय ने विक्रमादित्य द्वारा बनवाये गये शिव मन्दिर का जीर्णोधार किया था।[30] कोनी शिलालेख से ज्ञात होता है कि पृथ्वी देव के मंत्री पुरूषोत्तम ने शिव के पंचायतन मंदिर का निर्माण करवाया था।[31]
शिव एवं विष्णु के मन्दिरों के निर्माण के साथ–साथ छत्तीसगढ़ में रेवन्त ;सूर्य के पुत्राद्ध का मन्दिर का निर्माण करवाये जाने का भी साक्ष्य मिलता है, यह मन्दिर रत्नदेव द्वितीय के सामन्त वल्लभराज द्वारा बनवाया गया था।[32] राजिम शिलालेख से ज्ञात होता है कि पृथ्वीदेव द्वितीय के मंत्रीजगपाल द्वारा राम मन्दिर के निर्माण के लिए तथा उसके पूजन सामग्री के लिए एक ग्राम दान दिया गया था।[33]
रतनपुर शिलालेख से ज्ञात होता है कि पृथ्वीदेव द्वितीय के सामंत ब्रह्मदेव द्वारा घूर्जटि शिवमन्दिर के साथ नौ अन्य मन्दिरों की नींव रखी थी।[34] जाजल्लदेव द्वितीय के समय अम्म्रदेव द्वारा जाँजगीर में चन्द्रचूड़ेश्वर मन्दिर बनवाया था।[35] रत्नदेव तृतीय के मंत्री गंगाध्र ने रतनपुर में पशुपति शिव एवं हर हेरम्बमन्दिर, दुर्ग में दुर्गा का मन्दिर, पहपक में सूर्य मन्दिर, रतनपुर के उत्तर में टूटा गणपति आदि के मन्दिरों का निर्माण करवाया था।[36]
अतः उपरोक्त प्रमाणों से विदित होता है कि छत्तीसगढ़ के शासकों ने शिव, विष्णु, दुर्गा तथा सूर्य के मन्दिरों को बनवाया था।

स्थापत्य कला पर बौध्य प्रभाव – छत्तीसगढ़ीय भू–भाग से पुरातात्विक महत्व के अवशेष मिले हैं जिन पर बौध्य प्रभाव परीलक्षित होता है, यथा– सिरपुर के उत्खन्न से दो बौध्य विहार मिले हैं जिनकी भू–योजना के कारण यह स्वस्तिक विहार कहलाता है, तथा दूसरे विहार को आनन्दप्रभु कुटी कहते हैं, ये दोनों ही विहार ईंटों से निर्मित है, यहाँ से भगवान बुध्द की प्रतिमायें भी मिली है जिससे यह स्थल बौध्य धर्म से सम्बन्धित रहा है।[37] छत्तीसगढ़ के मल्लार से एक ताम्रपत्रा मिला है जिसमें कोरदेव की पत्नी अलका द्वारा तरघभोग विहार में रहने वाले सन्यासियों को ग्राम दान दिया था[38] जो स्थापत्यकला पर बौध्य प्रभाव को परीलक्षित करते हैं।

छत्तीसगढ़ीय स्थापत्य कला पर शैव प्रभाव – महाशिवगुप्त बालार्जुन के खरोद शिलालेख से ज्ञात होता है कि लखनेश्वर मन्दिर की देख रेख करने के लिए शासक द्वारा एक ग्राम दान दिया गया था।[39] खरोद लेख में दिये गये दान से यह कहा जा सकता है कि मन्दिरों की देखरेख तथा उनके रखरखाव, पुननिर्माण तथा जीर्णोर के लिए दान दिया जाता होगा जिसके परिणामस्वरूप यहाँ पर शैव मन्दिरों का निर्माण हुआ होगा। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ के शासक धर्मसहिष्णु थे जिन्होंने अपने राजत्व काल में विभिन्न ध्र्मों को प्रश्रय दिया था, जिसके परिणामस्वरूप छत्तीसगढ़ में शैव, वैष्णव, शाक्त तथा बौध्द धर्म से सम्बन्धित मूर्तियों तथा मन्दिरों का निर्माण हुआ होगा।
छत्तीसगढ़ राज्य से प्राप्त अभिलेख यह स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करते है, कि यहाँ शसक कला प्रेमी रहे हैं। शासित राजवंशों नें कलाकारों को अपने राज्य को प्रश्रय देकर स्थापत्य कला मूर्तिकला को प्रोत्साहित किया। यघपि राज्य से कला के अवशेष प्रागैतिहासिक काल से प्राप्त होते हैं जहाँ आदि मानव ने आड़ी तिरछी लकीरों को खींचकर अपन भावों को व्यक्त किया था।

सन्दर्भ

1. आप्टे, वामन शिवराम, संस्कृत हिन्दी कोश, पृ. 256
2. तिवारी, भोलानाथ, कला सम्मेलन पत्रिाका कला अंक पृ. 24
3. शुक्ल, रामचन्द्र, कला हिन्दी विश्वकोष खण्ड–2, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1962, कला, पृ. 378
4. गुप्ता, निलिमा, भारतीय लोक कला ;छत्तीसगढ़ के सन्दर्भ मेंद्ध, पृ. 11–13
5. का.इ.इ., भाग–4, पृ. 283, श्लोक 20
6. वही, पृ. 86–87
7. वही, पृ. 376
8. मध्यप्रदेश के पुरातत्व की रूपरेखा, पृ. 46
9. का.इ.इ. भाग–4, खण्ड–2, पृ. 654–55, श्लोक 1,5,9
   ओं नमो भगवते वासुदेवाय समुतिक्षपन्तु चत्वारः
   श्रेय सम्पतये सतां ध्र्मार्थकामनिर्न्वाणं कृष्णवाहः।
10. वही, केसरिणा हिरण्याकशिपोः क्रोधग्निरन्तगर्तः प्रोदगच्छन्रूध्रिच्छलेन ह्रदयं भित्वा ध्रुव दर्शितः।।
11. का.इ.इ., भाग–4, पृ. 504
    यत्कोडेजठरैककोटरकुटीविश्रान्तविश्वश्चिरंलक्ष्मीपाणिसरोजलालित पदोनिद्रातिनारायण, श्लोक–4
12. वही, भाग–4, पृ. 431,
    ''ओ नमः शिवाय पातु वः शम्भु लोकालोक प्रदीपोरजनिवरवध्रुचारूकर्ण्णावतन्सः शृधैंरवब्रह्मधम हरजटाजाहनवीराजहंसः गर्व्वकषश्रीः सद्वन्ध्ुः कैरवाणां जयति जनध्नानन्दो यमिन्दुः।।
13. वही, भाग–4, पृ. 481, 'उमामाहेस्वर सुन्दरतरं'
14. का.इ.इ., भाग–4, खण्ड 2
    ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः सम्मुख वाराही सा स्वयंयम् शंखचक्रध्रा देवी वैष्णवी गरुडासना, गोपालेन महाभक्त्या पुष्पै(पैश्च पूजिता। भुजधैंवलया देवी महावृभष...षण्मुखाशक्तिहस्ता ... वाराहीघोर संरावादष्ट्रोघृतवसुन्ध्रा, नारसिहीसटाक्षेपपातितोडगणाभूवि...एन्द्री वगवरारूढा वज्रहस्ता महाबला सहस्रलोचना देवी...नीलोत्पल दलश्यामा चामुंडा प्रोतवाहना ... मरीचा त्रिामुखी भीमा .. महाकाली महामाया .... सिध्दिः सरस्वती गौरी कीतिः प्रज्ञापराजिता। नन्दी महेशस्य विष्णोश्च गरूडो यथा ... शंभु निशंभु मथनी महावीर्य पराक्रमा चांडिका चन्डविक्रान्ता गोपालेन पुनः स्तुताः।।, पृ. 591
15. हीरालाल, सूचीक्रम, 229
16. वही, सूची, पृ. 304
17. वही
18. महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय सूची पत्रा 3, पृ. 1–2
19. वही, पृ. 5–6
20. वही, पृ. 7
21. वही, पृ. 12–13
22. हीरालाल सूची 184
23. श्रीवास्तव, महेशचन्द्र, सिरपुर, पृ. 35–43
24. आर्कलॉजिकल सर्वे ऑपफ इण्डिया रिपोर्ट 1909–10, पृ. 11–18
25. ठाकुर विष्णु सिंह, राजिम पृ. 25–75
26. श्री वास्तव, महेशचन्द्र 'सिरपुर', पृ. 35–45
27. जैन, वी.सी. उत्कीर्ण लेख, पृ. 36–44, एपि.इ., खण्ड–11, पृ. 184–197
28. एपि.इ., खण्ड 26, पृ. 49–58
29. वही, खण्ड–31, पृ. 31–36
30. वही, क्र. 78, पृ. 417–19
31. वही, क्र. द. पृ. 463
32. हीरालाल सूची, 121, का.इ.इ., भाग–4, खण्ड क्र.
33. का.इ.इ., भाग–4, क्र. 88, पृ. 450
34. वही
35. वही, भाग–4, खण्ड 2, क्र 98, पृ. 519–27
36. का.इ.इ., क्र 100
    गंधैंध्रेण ध्रणेर्ल्लामेवातिसुन्दरम् श्रीमदरत्नपुरे .. हरहेरम्बयोचके तत्रौव विसदालयो, देवीदुर्ग्गागृहं दुर्ग्गे रवेः पहपके, पोरथे भवनं शम्भोर भ्रकषम चीकरत् रत्नपुरस्योदीच्यां दिशि टूंटागणपतेरसौ चके।। पृ. 539
37. वही, भाग–31, पृ. 197–198, एपि, इ. भाग–11, पृ. 184–197
38. एपि.इ. भाग–23, पृ. 113–122
39. एपि.इ., भाग 33, पृ. 209

मुल सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Mirashi V.V.1. Inscriptions of the Kalachuri Chedi Era.
2. Mirashi V.V.2. Cropus Inscriptions Indicarum Vol. in Part-I,II Oatacammand 1955
3. Hiralal, Rai Bahadur Inscription in the Central Provinces and Berer, 2nd Edition, Nagpur, 1932
4. जैन, बी.सी उत्कीर्ण लेख, रायपुर
5. गुप्ता निलिमा भारतीय लोक कला, छत्तीसगढ़ के सन्दर्भ में, स्वाति पब्लिकेशन
6. श्री वास्तव, महेशचन्द्र सिरपुर, भोपाल
7. आप्टे, वामनाशिवराम, संस्कृत हिन्दी कोश
8. आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑपफ इण्डिया रिपोर्ट
9. आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑपफ इण्डिया एनुअल रिपोर्ट